मन की परछाई

पुनीत मिश्र

Copyright © 2022, Punit Mishra
All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing,
YRK Towers, Thadikara Swamy Koil St, Alandur,
Chennai, Tamil Nadu 600016

ISBN: 978-1-5457-5517-4
eISBN: 978-1-5457-5518-1

Library of Congress Cataloging in Publication

विषयसूची

दो शब्द

हिंदी कविताएं

हमराही

तुम मुझसे मिलने आते हो

मधुमास

कैसी कविता

मेरा क्षितिज

अज्ञात

पदचिन्ह

सूर्यास्त

कदापि

विघटन

तुम नारी हो

आखिर कब तक

शरशैया

पथिक

दिवाली

रावण दहन

स्मृतियाँ

पथिक

समर्पण

काश31

कंटक पथ

मातृभूमि

नव वर्ष

आसक्ति

प्रश्नचक्र

जीवन

सच

पतवार

मेरा भविष्य

मानवता

मृदा

रात्रि दीप

सृजन

झंझावात

व्यूह

निर्जन राह

चक्रवात

नया वर्ष

प्रतीक्षा

उनींदे नयन

मिट्टी

गज़लें और नज्म

चमकी बुखार

कल रात

सियाह रात

सीढ़ियां

खुद से मुखातिब

बेखुद

अधूरी नज़्म

मायूस सवेरा

अदीब

शमा

फांस

शहर

नसीहत

तिश्नगी

लॉक डाउन

पानी

कर्ज

तेरा अक्स

मिजाज़-ए-मौसम

बचपन

कागज़ और रंग

सो जाने दो

तीरगी

कैसे

परिंदे

जद्दोजहद

दलीलें

रिवायतें

अना

कशमकश

ख़ला

आईना

संदूक

बूंदें

तेरी आँखे

मेरी वसीयत

कीचड़

आँधी

मुन्तज़र

ख्वाहिश

सेहरा

गिरहें

अंजान साया

जख्मी वक़्त

धुआँ

आफताब का ख़त

ज़िन्दगी

परस्तिश

मरासिम
तस्वीर
अलाव
बवंडर
तन्हाई
वो शहर
फ़लक के जुगनू
काश
परछाई
सर्दी की चाय
सोने दो मुझे
प्यासी जमीं
सवाल
फिर से ज़िंदा कर दो

दो शब्द

कई वर्षों से एक लंबी परियोजना की भाँति ही यह कविता संग्रह एक आकार ले रहा था।

जिंदगी उफनती रही, सहती रही, चलती रही और बहती रही एक पूर्णता की ओर। अभी बहुत कुछ अधूरा है। अभी तो सफर की शुरुआत ही है लेकिन शिकायत कोई नहीं क्योंकि समय ही समय है, इस जहाँ में नहीं तो कहीं और सही, यात्रा तो चलती रहेगी पूर्णता की ओर…

बड़े लोगों ने संवारा है आज जिस भी रूप में हूँ। ये जो पोटली बाँधे फिरता हूँ इसमें बहुतों का योगदान है। उन सबका बड़ा आभारी हूँ मैं। अनुभव कैसे भी रहे हों, हर एक ने कुछ जोड़ा ही है घटने का तो सवाल ही नहीं उठता।

स्वर्गीय पिता जी को आदरपूर्वक नमन उनका वो कवि सम्मेलनों में ले जाना, और कविताएं लिखने और कविता पाठ के लिए प्रेरित करना, शायद वही बीज रोप गए थे इस "मन की परछाई" के।

परिवार में सभी और समस्त मित्रों को धन्यवाद प्रोत्साहित करने के लिए क्योंकि सत्य यही है कि आपकी प्रेरणा के बिना शायद ये हो नहीं पाता।

हमराही

कैसे मैं अभिव्यक्त करूँ को उमड़ रहा है मेरे मन में
ये वर्षों का समय अनोखा काट दिया हो जैसे क्षण में

हम राही तुम संग इस पथ पर, चल कर मैंने सब कुछ पाया
दृढ़ता से पग संग बढ़ाए, हो धूप सुनहरी या हो छाया

प्रेम पूर्ण विश्वास लिए, और एक दूजे को दिए सहारा
स्वप्नों को साकार कर रहा, है देखो परिवार हमारा

आओ हम आगे बढ़ते हैं, इस पड़ाव से अब अगले पर
साथ यूँ ही चलते जाएंगे, पग होते जाएंगे दृढ़तर

समपूरक मेरे सौभाग्य मेरा, जो तुम आए मेरे जीवन में
कैसे मैं अभिव्यक्त करूँ को उमड़ रहा है मेरे मन में

(माँ और पिताजी के विवाह की 50 वीं वर्षगाँठ पर एक दूसरे के प्रति उनके भावों को व्यक्त करती कविता)

तुम मुझसे मिलने आते हो

जब दूर गगन में तारों के
झुरमुट से होकर चांद खिले
पुष्पों को अपने केश डाल
मादक बयार श्रृंगार किए
ज्योत्सना के नर्तन का जादू
धरती पर अतिशय मोह पाश
पक्षी गाएं जब प्रेम राग
तुम मुझसे मिलने आते हो

दुविधा, संशय का वृष्टि पात
अंतस अधीर आतुर अबोध
ह्रदयांतर ये कैसा विरोध
जाग्रत नयनों का हठ समग्र
आशाओं का ये दीर्घ चक्र
विस्मित सा समय अचल अविरल
परिवर्तन की शाश्वत हलचल
नव किरणें जब हो आलोकित
तुम मुझसे मिलने आते हो

दर्पण अद्भुत प्रतिबिंब नया
शब्दों की सरिता काल जया
अविरत अनंत ये रत्नकोष
अधरों पर तिरता मणिक ओस
श्वेता शीतल तन सत्य शिवं
प्रतिमा अपनी तुम लिए स्वयं
स्वप्नों के मोहक उपवन में
तुम मुझसे मिलने आते हो

मधुमास

मैंने भी अपनी कविता में
कभी कोई मधुमास लिखा था
जीवन का वो हास लिखा था
किन्तु नहीं था ज्ञात मुझे ये
कलम नियति की मेरी खातिर
ऐसी कविता लिख डालेगी
उसने मेरे कोमल मन पर
प्रियतम के ही बाणों का
इतना गहरा आघात लिखा था
मैंने भी अपनी कविता में
कभी कोई मधुमास लिखा था

जग के इस तपते मरुथल में
ढूँढा हमने स्नेह सुधा रस
कटु शब्दों के संग पीने को
चंद घड़ी जीवन जीने को
किन्तु हाथ की रेखाओं में
अपने नयनों का खारा जल
पीने का दुर्भाग्य लिखा था
मैंने भी अपनी कविता में
कभी कोई मधुमास लिखा था

You’ve Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: https://store.prowesspub.com